भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 22 अंक : 10 | मंगलवार, 26.10.99 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मप्रवाह

नूतन वर्ष पर दिव्याशीष. .....

नए वर्ष में अहोहोभाव से
यदि हंसते मुंह कड़वे घूंट पी जाना सीख लेंगे,
लाभ पंचमी तक तो सावधान रहेंगे,
तो हृदय में आनंद के फुव्वारे फूटने शुरु हो जायेंगे।
प्रगट प्रभु मिले ही हैं, सो-अहोभाव-कृतार्थभाव
सहज रहना चाहिए।
हमारा ध्येय और हमारी मंजिल
गुणातीत ज्ञान में पूरी हो गई।
तो प्रसन्न रहो और हंसते मुंह
भीतर से प्रभु जो सुझायें वह काम करो।
नए वर्ष की यह भेंट वे हमसे मांग रहे हैं।
सो, जैसी हमारी वृत्ति वैसी हमारी दृष्टि
और
वैसा ही यह ब्रह्मसृष्टि!
लेकिन, आध्यात्मिकता में
और
विशेष रूप से गुणातीत ज्ञान में
पल-पल अंतराभिमुख ही रहना पड़ता है।
साक्षीभाव से निहारते-निहारते प्रभु की प्रेरणा हो उसके मुताबिक सत्पुरुषों की प्रसन्नता के लिए सत्संग की प्रवृत्ति करा करनी।
तो, हम जहाँ हैं वहीं जगत झड़ जाएगा
और
अखंड आनंद रहेगा।
लेकिन परेशानी जिसका दूसरा नाम मन-
वह मन सम्पूर्ण समर्पित हो जाए,
भगवदी के प्रसंग से मायिकभाव टल जाए,
तो वह मन यानि-तूफान, मन यानि मिज़री (दु:ख)-
वह समाप्त हो जाए और अमृत होकर
प्रभु भक्ति के लिए-निर्दोषबुद्धि के लिए समन हो जाए
व
चैतन्य प्रकृति का दिव्य देह बंध जाएगा।
आज के शुभ दिन की हमारी यह प्रतिज्ञा हो।
नींद में भी ऐसे ही सपने संजोना।
संकल्पशक्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक कल्पना
अधिक शक्तिशाली है।
तो, ऐसा स्मरणयोग प्रायश्चितरूप प्रार्थना के रूप में
सोते समय सभी कर लें.
और
अक्षरधाम का अखंड दिव्य सुख प्राप्त करें
यही गुरुचरणों में अंतर की प्रार्थना!

-प.पू. काकाजी महाराज
1 नवें. 78

मंगलमयी दीवाली.....

अहो! मंगलमयी दीवाली नजदीक आ रही है.....सभी भीतर में एक अनोखी ही खुशी-उमंग-उल्लास महसूस कर रहे होंगे। सामान्यतः लोग दीवाली के दिन दीप प्रगटा कर, आतिशबाजी इत्यादि करके, उपहारों का आपास में आदान प्रदान करके, अपने आप को संतुष्ट कर लेते हैं। लेकिन प्रकट के उपासकों के लिए दीवाली मनाना इन सबसे अलग है, वह क्या? तो –सत्पुरुष के संबंध से अपने अन्तर में दीप प्रगटाना और रोज ही दीवाली मान कर प्रभु की मूर्ति का आनंद पाना। आईये, प.पू. स्वामिजी द्वारा दीवाली निमित्त मिली निम्न सूझ को आनंद प्राप्त करने की करामात मान कर अपने जीवन में ढालने कृतनिश्चयी बनें.....

आज के बौखलाए और शोर शराबे भरे जीवन में दो ही बातें स्पष्टरूप से देखने में आती है; विसंवाद और पलायनवाद।

जहां भी देखो-आज दीवाली के बजाय होली दिखाई देती है। उसका कारण विसंवादी जीवन हैं। बोलने, चलने में विवेक नहीं और मिलजुल कर एक होकर उठाव लेने की रुचि या लक्ष्य भीतर में सुस्पष्ट नहीं। यानि-सुसंवाद सुधारने के बदले विसंवाद को न्यौता देते हैं। बातों बातों में बहस पर उतर आते हैं और फिर झगड़ा खड़ा करते हैं। इसी का शोरशराबा हैं और बेचैनी का उद्‌भव स्थान भी यही है।

एक दूसरे में सुसंवादिता के बिना समूह जीवन में मिठास का प्रगटीकरण शक्य नहीं। अलग-अलग **वाजिंत्र** अलग-अलग राग में बजें तो संगीत के बदले शोर शराबा लगेगा। एक ही राग में बजे तो मधुर, सुरीला संगीत निकले।

यूं आपसी सुसंवादिता के बिना सुहृद्‌भाव शक्य नहीं है। जीवन में सुहृद्‌भाव चरितार्थ करे बिना अखंड दीवाली भी नहीं हो सकती।

सुहृद्‌भाव महाराज और स्वामी के अंतर का अभिप्राय है। उस ओर हमारी लगातार नजर रह नहीं सकती उसकी वजह हैं हमारा बचपना। यह नासमझी निकल जाए, तो ही सुहृद्‌भाव जीवन में साकार बन सके.....और बड़े पुरुष की प्रसन्नता से जीवन सच में मंगलमय बना रहे।

वह बचपना क्या? .....तो

1. आपसी सहयोग के बिना काम करना वह बालक बुद्धि-नासमझी कहलाए।
2. एक-दूसरे के साथ बोलने करने में विवेक और मर्यादा न रहे वह बिल्कुल बालकबुद्धि-नासमझी ही है।
3. दूसरों को बुरा लग जाये और खुद के स्वभाव का पोषण होता रहे, यूं हंसी-मजाक करना या बोलना वह भी बचपना-बालक बुद्धि ही है।
4. दूसरों की उपेक्षा करें या उसे नीचा दिखायें यह जड़बुद्धि या बालकबुद्धि ही है।
5. मैं ठीक समझता हूँ, मैं बुद्धिशाली हूँ-ऐसा मान कर दूसरे पर हंसना या बोलना वह भी नासमझी का प्रदर्शन है।
6. 'धोबी से धोबी' होना वह केवल ना समझी है।
7. खुद को मिली सेवा या स्वधर्म बोझ-सा लगे वह नासमझी का ही लक्षण है।
8. बड़ों से मिली सेवा में आलस और प्रमाद रखें वह बालक बुद्धि कही जाए। हो जाएगा-चलता है, अब कल करेंगे-ऐसे विचार निरे देहाध्यास और नासमझी के हैं। सौंपी हुई सेवा कर लेने के बाद ही चैन आना चाहिए।
9. जिस सेवा की जिम्मेदारी बड़ों ने सौंपी हो वह सेवा उनके प्रति की वफादारी की भावना से ना हो वह पशुबुद्धि कही जाए। नासमझी से भी यह नीचे की कक्षा है।
10. इससे भी बढ़कर की नासमझी तो कोई हमारा अभाव ले जाता है, वह है। हमारे वर्तन से किसी को अभाव आए ऐसा हमारा वर्तन नहीं होना चाहिए। हम किसी को भी डाँट देने या सद्‌गुरु होने नहीं आए। हमारे साथ सच में लगाव हो, तो ही सलाह-सूचन देना।
11. भोली या सयानेपन वाली प्रकृति के कारण यदि हम स्वतंत्र वर्त डालें, तो उसकी जानकारी बड़े पुरुष को दे देनी चाहिए ही, वर्ना तो बालकबुद्धि का पोषण होता रहेगा।

ऐसी नासमझी कब दूर हो?

सच में संत के साथ लगाव हो जाए

और

बड़े पुरुष के गुणों का विचार करा करें (वच.ग.प्र.67)

सिर्फ बड़े पुरुष को ही प्रसन्न करने का विचार रखें

और

सुरुचि रख कर लग पड़े,

तो नासमझी नहीं रहेगी।

प.पू. बापा ने जूनागढ़ की धरती छोड़ी तब मंदिर के तीन सौ साधुओं की आंखों में आंसू थे। वह प्रीति कैसी होगी! ऐसी

रसबसता और सर्वोपरि प्रीति कैसे हो? ऐसी प्रीति और रसबसता होने में आड़ के रूप में-अंतराय के रूप में यह नासमझी ही बाधारूप है। सो, हर एक के साथ बोलने चलने में अच्छा उठाव लेना, जिससे हर एक को हम जँचे और हर एक हमें जँचे। बापा कैसे!

वाणी अमृतथी भरी मधुसमी संजीवनी लोकमां,
दृष्टिमां भरी दिव्यता निरखता सुदिव्य भक्तो बधां,
हैये हेत भर्युं मीठुं जननी शुं ने हास्य मुछे वस्युं,
ते श्री ज्ञानजी योगीराज गुरु ने नित्य नमुं भावशुं।

ऐसी सच्ची प्रीति और आपसी रसबसता यही हमारी अखंड दीवाली है... और तभी महाराज, स्वामी और बड़े पुरुष प्रसन्न होते हैं और हमारा जीवन सच में धन्य बन जाता है।

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी
1 नवें 78

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

श्रवण मनन, निदिध्यासन

- ऐसे संत को हमारी लोजिक से हम नहीं पहचान पायेंगे। ऐसे साधु के समागम से पहचान होगी। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि स्वरूप का ज्ञान ऐसे तत्त्वदर्शी-ज्ञानी संत के द्वारा मिलेगा।
- जो संत के द्वारा भगवान के पास पहुँचेगा उसके साथ भगवान कभी खेलेंगे नहीं।
- जो प्रभु का भरोसा करता है उसके साथ प्रभु कभी नहीं खेलते-प्रभु को यह एक कायदा है।
- प.पू. पप्पाजी कई बार कहते हैं कि प्रभु टेढ़े के साथ टेढ़े, ज्यादा टेढ़े के साथ अधिक टेढ़े, सीधे के साथ एकदम सीधे.....
- कृष्ण को कपटी-प्रपंच खेलने वाला बोला गया; पर भागवत में या महाभारत में एक भी इन्सिडेन्स ऐसा नहीं मिलेगा कि भगवान कृष्ण ने **अर्जुन के साथ** कोई छलाव किया हो। क्योंकि अर्जुन उनका निजी था। इसलिए आप सब प.पू.काकाजी के निजी हो, सो आप लोगों के साथ हम कभी-छलाव कर ही नहीं पाएंगे। यह बात खूब विश्वास से मानना।
- हम सब भगवान के साथ भी धोखाधड़ी करते हैं। मन में कुछ अलग होता है, बोलते कुछ और हैं व करते कुछ अलग हैं। तो फिर ऐसे धोखाधड़ी करने वालों के साथ प्रभु भी कभी स्पष्ट वास्तविकता का व्यवहार नहीं रखते।
- अब जमाना ऐसा आया है कि जहां श्रद्धा के साथ बुद्धि होगी वहां ही धर्म रहेगा। अकेली श्रद्धा या अकेली बुद्धि दोनों ही नुकसान पहुंचायेगी। सिर्फ श्रद्धा रहेगी तो धर्म के नाम पर धोखे में ठग लिए जायेंगे। अर्जुन को कृष्ण मिले तो उसके कुरुक्षेत्र का अंत आया। हमें प.पू. काकाजी जैसी विभूति मिली, पर हमारे कुरुक्षेत्र का अंत नहीं आया, क्योंकि हम सिर्फ बुद्धि पर चलते रहे-श्रद्धा रखी ही नहीं।
- गीता का सबसे अच्छा पात्र अर्जुन! जो भगवान के साथ दोस्ती से रहा। आज जमाना वो आया है कि मां-बाप भी अगर बच्चों के साथ दोस्ती से नहीं रहेंगे तो काम नहीं चलेगा। ऑफिस में बॉस भी अगर अपने जूनीयर्स के साथ दोस्ती से काम नहीं लेगा तो वो काम नहीं निकाल पायेगा। पहले स्त्री पति की दासी मानी जाती थी; आज अगर पति पत्नी की भावनाओं को नहीं समझेगा तो वैवाहिक जीवन कामयाब नहीं होगा।
- महाराज भी अपने भक्तों के साथ सखाभाव से ही रहे। खेलें, कूदें-आनन्द कराया.....प.पू.काकाजी भी कहते थे कि मैं तुम्हारा फ्रेन्ड हूँ।
- कई प्रकार के भाव हैं-मधुरभाव, दासभाव, बंधुभाव, सखाभाव, वात्सल्यभाव, सखीभाव, गुरुभाव। इनमें से किसी एक प्रकार का भी संबंध अनन्यभाव से जरूर कर लेना चाहिए। सखाभाव करना सबसे अच्छा संबंध है।
- सत्संग मिलने के बाद व्यवहार का कोई दुःख है तो निष्ठा में कसर है।
- शास्त्रों की,परोक्ष की भक्ति की जो भ्रान्ति अन्दर पड़ी हुई है उसके कारण प्रगट की मेथेमेटिक्स हमारे भेजे में उतरती नहीं। प्रगट के इक्वेशन्स हम समझते ही नहीं हैं । ओहो! इतना आसान है? साधन से तो हम कब ब्रह्मरूप होंगे.....? पर ब्रह्मस्वरूप संत के संबंध से हम ब्रह्मरूप! क्या करोड़पति का लड़का कभी सोचेगा कि मैं बैंक ऑफ बड़ौदा में एप्लाई करूं या देना बैंक में सर्विस करने के लिए एप्लाई करूँ? इस तरह प.पू. काकाजी यानि-ब्रह्मस्वरूप ने हमें अपनाया तो हम ब्रह्मरूप... अब तो ब्रह्मरूप की डिसीप्लीन से वर्तना-वो सीखना बाकी है। पर स्टाम्प तो हम पर लग गया है।

✡ जो भगवान भजने के रास्ते पर चलते हैं उनके लिए प्रभु पहले। उस पर मातृ ऋण, पितृ ऋण, समाज ऋण, देश ऋण नहीं रहता; क्योंकि उसका डायरेक्ट कन्ट्रोल प्रभु का ही रहता है। वो सिर्फ प्रभु का ही है।

✡ अपनी गलती को कम से कम कबूल तो करो।

✡ बाबर को दवा काम नहीं आई, दुआ काम आई। प्रार्थना में अत्यधिक फोर्स है।

✡ प.पू. काकाजी अतिशय दयालु प्रकृति के पुरुष! उन्होंने किसी के गुण-दोषों, अपेक्षा-उपेक्षा को कभी नहीं गिना। सामने से आकर हमारे प्रारब्ध-प्रकृति अपने सिर पर लेकर घूमा करें और उसका बोझ वो उठाया करें-वो काकाजी! हम उनके रहें या न रहें, उनके होकर जीयें या ना जीयें, वे हमें चिपके रहेंगे।

✡ नौकरी चाहिए, लड़का चाहिए, पैसा चाहिए, कोई तकलीफ होती हो तभी हम संत के पास जाते हैं।

-प.पू. गुरुजी

✡ ब्रह्मस्वरूप असली संत को पहचानने के लिए चर्म चक्षु बंद कर देने पड़ते हैं। मन-बुद्धि, दिल-दिमाग बंद कर देना पड़ता है। अन्तरात्मा के दिव्य चक्षु से उन्हें पहचान सकते हैं। वो साधन से नहीं बनेगा। ऐसे संत की कृपा से ही बनेगा।

✡ धन्य हो शास्त्री जी महाराज-योगीजी महाराज को कि एक आध्यात्मिक समाज की स्थापना की... एक रहस्य दिया..... मैं आज सुनकर बहुत खुश हो गया क्योंकि अपने–दिल्ली के समाज ने हमारे मुकुंदजीवनस्वामी को पहचान लिया। हमारी पहचान एकदम नहीं होगी..

-प.पू.काकाजी महाराज

निमंत्रण

8 नवेम्बर 99, सोमवार सुबह 11:45 को
'अनिर्देश' में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज
एवं
सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों को
वार्षिक महाभोग लगा कर अन्नकूट की
आरती होगी.....
इस मंगलकारी अवसर पर
सपरिवार ईष्ट मित्रमंडली सहित उपस्थित
रहने का
आपको हार्दिक निमंत्रण है।
-**योगी डिवाईन सोसाईटी**, दिल्ली

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 5.11.99	शुक्रवार	- धनतेरस-लक्ष्मी पूजन
(2)	दि. 7.11.99	रविवार	- दीपावली, शारदा पूजन
(3)	दि. 8.11.99	सोमवार	- अन्नकूटोत्सव,
(4)	दि. 9.11.99	मंगलवार	- नूतन वर्ष प्रारंभ
(5)	दि.10.11.99	बुधवार	- भैया दूज
(6)	दि.13.11.99	शनिवार	- लाभ पंचमी
(7)	दि.19.11.99	शुक्रवार	- प्रबोधिनी एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'Bhagwatkripa' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393